



Free Training on Stock Market

Read our Free Book on "Art of Stock Investing". YouTube Channel name - bse2nse

freestocktraining.in

OPEN

HOME संस्कृत शिक्षण पाठशाला » DOWNLOADS » लघुसिद्धान्तकौमुदी » साहित्यम् » दर्शनम् » स्तोत्रम्/गीतम् » कर्मकाण्डम् » विविध »

Home » कर्मकाण्ड » देव पूजा विधि Part-5 नान्दीश्राद्ध प्रयोग

देव पूजा विधि Part-5 नान्दीश्राद्ध प्रयोग

जगदानन्द झा 1:54 am 1 टिप्पणी

आचमन, प्राणायाम कर सङ्कल्प ॐ अद्येत्यादि देशकालौ संकीर्त्य कर्तव्यामुक्तकर्माङ्गत्वेन साङ्कल्पिकेन विधिना ब्राह्मणयुग्म-भोजन-पर्याप्तान्न निष्क्रयभूत-यथाशक्ति-हिरण्येन नान्दीमुखश्राद्धमहं करिष्ये। हाथ जोड़कर तीन बार निम्नोक्त का पाठ करें-ॐ देवताभ्यः पितृभ्यश्च महायोगिभ्य एव च। नमः स्वाहायै स्वधायै नित्यमेव नमो नमः। श्राद्धकाले गयां ध्यात्वा ध्यात्वा देवं गदाधरम्। मनसा च पितृभ्यां नान्दीश्राद्धं समारभे।

एक पत्तल पर पूर्व से दक्षिण, प्रदक्षिण क्रमानुसार सीधे कुशाओं को बिछाकर उन पर सव्य होकर सर्वप्रथम हाथ में जल लेकर 'ॐ सत्यवसुसंज्ञकाः विश्वेदेवाः नान्दीमुखाः भूर्भुवः स्वः इदं वः पाद्यं पादावनेजनं पादप्रक्षालनं वृद्धिः।' तक वाक्य पढ़कर अपने हाथ से लिये जल को अंगूठे से पत्तल पर रखे गये आसन रूप कुश पर विश्वेदेव के पादप्रक्षालन के लिए जल को गिरा दें। इसी प्रकार प्रदक्षिण क्रम से मातृ-पितामहि-प्रपितामहाः नान्दीमुखः भूर्भुवः स्वः इदं वः पाद्यं पादावनेजनं पादप्रक्षालनं वृद्धिः।' तक उच्चारण कर 'मातामह-प्रमातामह-वृद्धप्रमातामहः सपत्नीकाः नान्दीमुखाः भूर्भुवः स्वः इदं वः पाद्यं पादावनेजनं पादप्रक्षालनं वृद्धिः।' मातृ-पितामही और प्रपितामही, पितृ पितामह तथा प्रपितामह एवं सपत्नीक मातामह, प्रमातामह एवं वृद्धप्रमातामह को पादप्रक्षालन के लिए अर्घ्य जल दे। पुनः

ॐ सत्यवसुसंज्ञकाः विश्वेदेवाः नान्दीमुखाः भूर्भुवः स्वः इमे आसने वो नमो नमः। मातृ-पितामहि-प्रपितामहाः नान्दी मुखः भूर्भुवः स्वः इमे आसने वो नमो नमः। पितृ-पितामह प्रपितामहाः नान्दीमुखाः भूर्भुवः स्वः इमे आसने वो नमो नमः। द्वितीयगोत्राः-मातामह-प्रमातामह-वृद्धप्रमातामहाः सपत्नीकाः नान्दीमुखाः भूर्भुवः स्वः इमे आसने वो नमो नमः। पढ़कर विश्वेदेव को कुशरूप आसन प्रदान करे।

गन्धादिदान-तत्पश्चात् उन चारों स्थानों पर क्रम से 'ॐ सत्यवसुसंज्ञकाः विश्वेदेवाः नान्दीमुखाः भूर्भुवः स्वः इदं गन्धाद्यर्चनं स्वाहा सम्पद्यतां वृद्धिः। मातृ-पितामहि-प्रपितामहाः नान्दीमुखः भूर्भुवः स्वः इदं गन्धाद्यर्चनं स्वाहा सम्पद्यतां वृद्धिः। पितृ-पितामह-प्रपितामहाः नान्दीमुखाः भूर्भुवः स्वः इदं गन्धाद्यर्चनं स्वाहा सम्पद्यतां वृद्धिः। द्वितीयगोत्राः-मातामह-प्रमातामह- वृद्धप्रमातामहाः सपत्नीकाः नान्दीमुखाः भूर्भुवः स्वः इदं गन्धाद्यर्चनं स्वाहा सम्पद्यतां वृद्धिः। तक वाक्य पढ़कर विश्वेदेव से लेकर सपत्नीक मातामह-प्रमातामह एवं वृद्धप्रमातामह तक के लिए जल, वस्त्र, यज्ञोपवीत चन्दन (रोरी), अक्षत, पुष्प, दीप, नैवेद्य, ऋतुफल, पान तथा सुपारी आदि से पूजन करे।

भोजन निष्क्रयदान-तदनन्तर क्रमशः चारों स्थान पर ॐ सत्यवसुसंज्ञकाः विश्वेदेवाः नान्दीमुखाः भूर्भुवः स्वः इदं युग्मब्राह्मण-भोजन-पर्याप्तमामात्र-निष्क्रयभूतं द्रव्यममृतरूपेण स्वाहा सम्पद्यतां वृद्धिः। मातृ-पितामहि-प्रपितामहाः नान्दीमुखः भूर्भुवः स्वः इदं युग्म-ब्राह्मणभोजन- पर्याप्तमामात्र-निष्क्रयभूतं द्रव्यममृतरूपेण स्वाहा सम्पद्यतां वृद्धिः। पितृ-पितामह-प्रपितामहाः नान्दीमुखः भूर्भुवः स्वः इदं युग्म-ब्राह्मण- भोजन-पर्याप्तमामात्रनिष्क्रयभूतं द्रव्यममृतरूपेण स्वाहा सम्पद्यतां वृद्धिः। द्वितीयगोत्राः-मातामह प्रमातामह-वृद्धप्रमातामहाः सपत्नीकाः नान्दीमुखाः भूर्भुवः स्वः इदं युग्मब्राह्मण- भोजनपर्याप्तमामात्र-निष्क्रयभूतं द्रव्यममृतरूपेण स्वाहा

Search

Popular

Tags

Blog Archives

लोकप्रिय पोस्ट



देव पूजा विधि Part-1 स्वस्तिवाचन, गणेश पूजन

इस प्रकरण में पञ्चाङ्ग पूजा विधि दी गई है। प्रायः प्रत्येक संस्कार, व्रतोद्यापन, हवन आदि यज्ञ यज्ञादि में पञ्चाङ्ग पूजन क...



संस्कृत कैसे सीखें

इस ब्लॉग में विष्णु, शिव, शक्ति, सूर्य, गणेश एवं अन्य विविध देवी देवताओं के स्तोत्रों का विशाल संग्रह उपलब्ध है। संस्क...



तर्पण विधि

प्रातःकाल पूर्व दिशा की ओर मुँह कर बायें और दाहिने हाथ की अनामिका अंगुली में पवित्री (पैती) धारण करें। यज्ञोपवीत को सव्य कर लें। त...



लघुसिद्धान्तकौमुदी (अस्सन्धि-प्रकरणम्)

अथ
अस्सन्धि: If you cannot see the audio controls, your browser does not suppo...

सम्पद्यतां वृद्धिः। विश्वेदेव के निमित्त दो ब्राह्मण, जितना आमान्न भोजन कर सकें, उसका निष्कय (मूल्य) भूत दक्षिणा दे। इसी प्रकार माता, पितामही एवं प्रपितामही तथा पिता, पितामह, एवं प्रपितामह और द्वितीयगोत्र वाले सपत्नीक मातामह, प्रमातामह और वृद्धप्रमातामह को भी विश्वेदेव की भांति दक्षिणा प्रदान करे।

दुग्ध-मिश्रित जलादिदान-तत्पश्चात् चारों स्थान पर क्रम से दूध, यव और जल को एक में मिलाकर दाहिने हाथ में लेकर अंगूठे से ॐ सत्यवसुसंज्ञकाः विश्वेदेवाः नान्दीमुखाः प्रीयन्ताम्। मातृपितामहि-प्रपितामहाः नान्दीमुखः प्रीयन्ताम्। पितृ-पितामह-प्रपिता महाः नान्दीमुखाः प्रीयन्ताम्। (द्वितीयगोत्राः) मातामह-प्रमातामह-वृद्धप्रमातामहाः सपत्नीकाः नान्दीमुखाः प्रीयन्ताम्। वाक्य उच्चारण कर विश्वेदेव के साथ सपत्नीक पिता, पितामह, प्रपितामह एवं सपत्नीक मातामह, प्रमातामह तथा वृद्धप्रमातामह के निमित्त अलग-अलग देवे।

जल-पुष्प-अक्षत प्रदान-पुनःचारों स्थानों पर 'ॐ शिव आपः सन्तु' पढ़कर दाहिने हाथ के अंगूठे से जल, 'ॐ सौमनस्यमस्तु' इससे पुष्प, 'ॐ अक्षतं चारिष्टं चास्तु' से अक्षत, विश्वेदेव से सपत्नीक-पिता, पितामह एवं प्रपितामह तथा मातामह, प्रमातामह एवं वृद्धप्रमातामह पर क्रमशः पृथक्-पृथक् चढ़ावें।

जलधारा दान-पुनः अंजलि में जल लेकर अधोराः पितरः सन्तु यह वाक्य पढ़कर चारों स्थानों पर क्रमशः सभी पितरों के लिए अंगूठे की ओर से पूर्वाग्रि जलधारा प्रदान करे।

आशीर्वाहणम्-यजमान-ॐ गोत्रां नो वर्द्धताम् ब्राह्मणाः-ॐ वर्द्धतां वो गोत्रम्। यज. ॐ दातारो नोभिवर्द्धन्ताम्, ब्रा०-ॐ वर्द्धन्तां वो दातारः। यज०-ॐ वेदाश्च नोऽभिवर्द्धन्ताम्, ब्रा०-ॐ वर्द्धन्तां वो वेदाः। यज.-ॐ सन्ततिर्नोऽभिवर्द्धन्तां। ब्रा०-ॐ वर्द्धन्तां वः सन्ततिः। यज.-ॐ श्रद्धा च नो मा व्यपगमत्, ब्रा०-ॐ मा व्यपगमद्दः श्रद्धा। यज.-ॐ बहु देयं च नोऽस्तु, ब्रा०-ॐ अस्तु वो बहु देयम्। यज. अन्नं च नो बहु भवेत्, ब्रा०-ॐ बहु भवेद्गोऽन्नम्। यज.-ॐ अतिथींश्च लभामहे, ब्रा०-ॐ लभन्तां वोऽतिथयः। यज.-ॐ याचितारश्च नः सन्तु, ब्रा०-ॐ सन्तु वो याचितारः। यज. ॐ एता आशिषः सत्याः सन्तु, ब्रा० ॐ सन्वेताः सत्या आशिषः।

दक्षिणा दान-पुनः सत्यवसुसंज्ञकाः विश्वेदेवाः नान्दीमुखाः भूर्भुवः स्वः कृतैतन्नान्दीश्राद्धस्य फलप्रतिष्ठासिद्ध्यर्थं द्राक्षाऽमलक-यवमूल-निष्कयिणीं दक्षिणां दातुमहमुत्सृजे। पढ़कर मुनक्का आवंला, यव एवं अदरक आदि क्रमशः संकल्प करके चारों स्थानों पर विश्वेदेव सहित सपत्नीक पितृ, पितामह, प्रपितामह तथा सपत्नीक मातामहादि के निमित्त देव और इन वस्तुओं के अभाव में निष्कयभूत द्रव्य-दक्षिणा दान करे। 'मातृ-पितामहि-प्रपितामहाः नान्दीमुखः भूर्भुवः स्वः कृतैतन्नान्दी श्राद्धस्य फलप्रतिष्ठासिद्ध्यर्थं द्राक्षाऽमलक-यवमूल-निष्कयिणीं दक्षिणां दातुमहमुत्सृजे। पितृ-पितामह-प्रपितामहाः नान्दीमुखाः भूर्भुवः स्वः कृतैतन्नान्दीश्राद्धस्य फलप्रतिष्ठासिद्ध्यर्थं द्राक्षाऽमलक-यवमूल-निष्कयिणीं दक्षिणां दातुमहमुत्सृजे। (द्वितीयगोत्राः) मातामह-प्रमातामह-वृद्धप्रमातामहाः सपत्नीकाः नान्दीमुखाः भूर्भुवः स्वः कृतैतन्नान्दीश्राद्धस्य फलप्रतिष्ठासिद्ध्यर्थं द्राक्षाऽमलक-यवमूल-निष्कयिणीं दक्षिणां दातुमहमुत्सृजे।

इसके बाद यव, पीली सरसों, ऋतुफल, दूर्वा, दुग्ध, जल, कुश, चन्दन एवं पुष्प सहित अर्घ्यपात्र को दाहिने हाथ में लेकर 'ॐ उपामै गायता नरः पवमानायेन्दवे। अभि देवाँ २ इयक्षते॥१॥ ॐ इडामग्रे पुरुद० स० सनिङ्गोः शश्वम ठ हवमानाय साध। स्यान्नः सुनुस्तनयो विजावाऽग्रे सा ते सुमतिर्भूवस्ते' इन दो मन्त्रों से चारों स्थानों पर अर्घ्य प्रदान करे।

तत्पश्चात् यजमान हाथ में जल लेकर नान्दीश्राद्ध की सम्पन्नता के लिए प्रार्थना करते हुए 'अनेन नान्दीश्राद्धं सम्पन्नम्' कहकर भूमि पर जल छोड़ दे। ब्राह्मणगण 'सुसम्पन्नं नान्दीश्राद्धम्' ऐसा कह दें।

पुनः यजमान 'ॐ वाजे वाजे वत वाजिनो नो धनेषु विप्रा अमृताऽऋतज्ञाः। अस्य मध्वः पिबत मादयध्वं तृप्ता यात पथिभिर्देवयानैः॥ आ मा वाजस्य प्रसवो जगम्यादेमे द्यावापृथिवी विश्वरूपे। आ मा गन्तां पितरा मातरा चामा सोमोऽमृतत्वेन गम्यात्।' तक दो मन्त्रा तथा 'विश्वेदेवाः प्रीयन्ताम्' ऐसा वाक्य कहकर विसर्जन करे। हाथ में जल लेकर ॐ मयाचरितेऽस्मिन् सांकल्पिकनान्दीश्राद्धे न्यूनातिरिक्तो यो विधिः स उपविष्ट-ब्राह्मणानां वचनाच्छीनान्दीमुख-पितृप्रसादाच्च सर्वः परिपूर्णोऽस्तु। अस्तु परिपूर्णः ऐसा ब्राह्मण कहे। उसके बाद प्रमादात् पढ़कर ॐ विष्णवे नमो विष्णवे नमो विष्णवे नमः इति प्रणमेत्।

सांकल्पिक नान्दी-श्राद्ध समाप्त।

Share: [f](#) [t](#) [G+](#) [in](#)



जगदानन्द झा

लखनऊ में प्रशासनिक अधिकारी के पदभार ग्रहण से पूर्व सामयिक विषयों पर कविता, निबन्ध लेखन करता रहा। संस्कृत के सामाजिक सरोकार से जुड़ा रहा। संस्कृत विद्या में महती अभिरुचि के कारण अबतक चार ग्रन्थों का सम्पादन। संस्कृत को अन्तर्जाल के माध्यम से प्रत्येक लाभार्थी तक पहुँचाने की जिद। संस्कृत के प्रसार एवं विकास के लिए ब्लॉग तक चला आया। मेरे अपने प्रिय शताधिक वैचारिक निबन्ध, हिन्दी कविताएँ, 21 हजार से अधिक संस्कृत पुस्तकें, 100 से अधिक संस्कृतज्ञ विद्वानों की जीवनी, व्याकरण आदि शास्त्रीय विषयों की परिचर्चा, शिक्षण-प्रशिक्षण और भी बहुत कुछ मुझे एक दूसरी ही दुनिया में खींच ले जाते हैं। संस्कृत की वर्तमान समस्या एवं वृहत्तम साहित्य को अपने अन्दर महसूस कर अपने आप को अभिव्यक्त करने की इच्छा बलवती हो जाती है। मुझे इस क्षेत्र में कार्य करने एवं संस्कृत विद्या अध्ययन को उत्सुक समुदाय को नेतृत्व प्रदान करने में अत्यन्त सुखद आनन्द का अनुभव होता है।

← नई पोस्ट

मुख्यपृष्ठ

पुरानी पोस्ट →

1 टिप्पणी:

Unknown 6 मई 2019 को 10:07 am

Free Training on Share Market

freestocktraining.in

Free Book on Stock Market

Read our Free Book on "Art of Stock Investing" YouTube Channel na bse2nse

OPEN

ब्लॉग की सामग्री यहाँ खोजें।

लेखानुक्रमणी

- ▶ 2020 (23)
- ▶ 2019 (57)
- ▶ 2018 (63)
- ▶ 2017 (42)
- ▶ 2016 (32)
- ▶ 2015 (37)



उत्तम है
जवाब दें

अपनी टिप्पणी लिखें...



इस रूप में टिप्पणी करें:

Vasudev Shastri (C

साइन आउट करें

डालें

पूर्वावलोकन

☐ मुझे सूचित करें

1st Grade

2nd Grade

3rd Grade

4th Grade

5th Grade

6th Grade

7th Grade

8th Grade

Adapted
Mind



▼ 2014 (106)

► दिसंबर (6)

► नवंबर (8)

► अक्टूबर (5)

► सितंबर (2)

► अगस्त (9)

► जुलाई (2)

► मई (4)

► अप्रैल (11)

▼ मार्च (40)

धर्मशास्त्र के प्रसिद्ध एवं महत्वपूर्ण ग्रंथों तथा...

संस्कृत काव्यों में छन्द

स्मृति ग्रन्थों में आचरण की व्यवस्था, एक समीक्षा

स्मृति ग्रन्थों में आचरण की व्यवस्था (तृतीय अध्याय...

स्मृति ग्रन्थों में आचरण की व्यवस्था (तृतीय अध्याय...

स्मृति ग्रन्थों में आचरण की व्यवस्था (तृतीय अध्याय...

स्मृति ग्रन्थों में आचरण की व्यवस्था (तृतीय अध्याय...

स्मृति ग्रन्थों में आचरण की व्यवस्था (तृतीय अध्याय...

स्मृति ग्रन्थों में आचरण की व्यवस्था (द्वितीय अध...

स्मृति ग्रन्थों में आचरण की व्यवस्था, स्मृति - स्व...

संस्कृत भाषा के विकास हेतु कार्ययोजना

संस्कृत भाषा और छन्दोबद्धता

संस्कृत की पुस्तकें वाया संस्कृत संस्थान

Learn Hieratic in Hindi Part -5 उपनयन

संस्कार

कार्तिक स्त्री प्रसूता शान्ति

मूलगण्डान्त शान्ति प्रयोग

गृहप्रवेश विधि

शिलान्यास विधि

देव पूजा विधि Part-22 भागवत पूजन विधि

देव पूजा विधि Part-20 सत्यनारायण पूजा विधि

देव पूजा विधि Part-19 अभिषेक विधि

देव पूजा विधि Part-18 हवन विधि

देव पूजा विधि Part-17 कुश कण्डिका

देव पूजा विधि Part-16 प्राणप्रतिष्ठा विधि

देव पूजा विधि Part-15 सर्वतोभद्र पूजन

देव पूजा विधि Part-14 महाकाली, लेखनी, दीपावली
पूजन...

देव पूजा विधि Part-13 लक्ष्मी-पूजन

देव पूजा विधि Part-12 कुमारी-पूजन

देव पूजा विधि Part-11 दुर्गा-पूजन

देव पूजा विधि Part-10 पार्थिव-शिव-पूजन

देव पूजा विधि Part-9 शिव-पूजन

देव पूजा विधि Part-8 शालग्राम-पूजन

देव पूजा विधि Part-6 नवग्रह-स्थापन एवं पूजन

देव पूजा विधि Part-5 नान्दीश्राद्ध प्रयोग

देव पूजा विधि Part-4 षोडशमातृका आदि-पूजन

देव पूजा विधि Part-3 पुण्याहवाचनम्

देव पूजा विधि Part-2 कलशस्थापन

देव पूजा विधि Part-1 स्वस्तिवाचन, गणेश पूजन

देवताओं के पूजन के नियम

► फ़रवरी (11)

► जनवरी (8)

► 2013 (13)

► 2012 (55)

► 2011 (14)

जगदानन्द झा. Blogger द्वारा संचालित.

मास्तु प्रतिलिपि:

इस ब्लॉग के बारे में

संस्कृतभाषी ब्लॉग में मुख्यतः मेरा

वैचारिक लेख, कर्मकाण्ड, ज्योतिष, आयुर्वेद, विधि,
विद्वानों की जीवनी, 15 हजार संस्कृत पुस्तकों, 4 हजार
पाण्डुलिपियों के नाम, उ.प्र. के संस्कृत विद्यालयों,
महाविद्यालयों आदि के नाम व पता, संस्कृत गीत

आदि विषयों पर सामग्री उपलब्ध हैं। आप लेवल में जाकर
इच्छित विषय का चयन करें। ब्लॉग की सामग्री खोजने के लिए
खोज सुविधा का उपयोग करें

संस्कृतसर्जना वर्ष 1 अंक 2

Powered by

[Publish for Free](#)

संस्कृतसर्जना वर्ष 1 अंक 3

Powered by

[Publish for Free](#)

SANSKRITSARJANA वर्ष 2 अंक-1

Powered by

[Publish for Free](#)

मेरे बारे में



जगदानन्द झा
मेरा पूरा प्रोफ़ाइल देखें

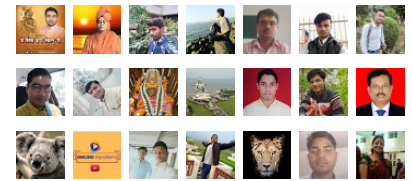
संस्कृतसर्जना वर्ष 1 अंक 1

Powered by

[Publish for Free](#)

समर्थक एवं मित्र

Followers (277) [Next](#)



[Follow](#)

RECENT POSTS

करोना के परिप्रेक्ष्य में स्मृति ग्रंथों में वर्णित आचरण की व्यवस्था
कम्प्यूटर द्वारा संस्कृत शिक्षण का पाठ्यक्रम
काव्यप्रकाश: (दशम उल्लास: 2)
काव्यप्रकाश: (दशम उल्लास: 1)
काव्यप्रकाश: (नवम उल्लास:)

अव्यवस्थित सूची

संस्कृत की प्रतियोगिताएँ
श्रीमद्भागवत की टीकाएँ
जनगणना 2011 में संस्कृत का स्थान
उत्तर प्रदेश के माध्यमिक संस्कृत विद्यालय

लेखाभिज्ञानम्

अंक	अभिनवगुप्त	अलंकार	आचार्य
आधुनिक संस्कृत	आधुनिक संस्कृत गीत		
आधुनिक संस्कृत साहित्य	आम्बेडकर		
उत्तर प्रदेश संस्कृत संस्थान	उत्तराखंड	ऋग्वेद	ऋतु
ऋषिका	कणाद	करक चतुर्थी	करण
कर्मकाण्ड	कामशास्त्र	कारक	काल
काव्यशास्त्र	काव्यशास्त्रकार	कुमाँ	कूर
कूर्माचल	कृदन्त	कोजगरा	कोश
गाय	गीतकार	गीति काव्य	गुरु
गोविन्दराज	ग्रह	चरण	छन्द
जगदानन्द झा	जगन्नाथ	जीवनी	ज्योतिष
तकनीकी शिक्षा	तद्धित	तिङन्त	तिथि
दर्शन	धन्वन्तरि	धर्म	धर्मशास्त्र
नाट्यशास्त्र	नायिका	नीति	पक्ष
पत्रकारिता	पत्रिका	पराङ्कुशाचार्य	पाण्डुलिपि
पालि	पुरस्कार	पुराण	पुरुषार्थोपदेश
पुस्तक संदर्शिका	पुस्तक सूची	पुस्तकालय	पूजा
प्रत्यभिज्ञा शास्त्र	प्रशस्तपाद	प्रहसन	प्रौद्योगिकी
विल्हण	बौद्ध	बौद्ध दर्शन	ब्रह्मसूत्र
भर्तृहरि	भामह	भाषा	भाव्य
		भोज प्रबन्ध	मगध

मनु	मनोरोग	महाविद्यालय	महोत्सव	मुहूर्त
योग	योग दिवस	रचनाकार	रस	राजभाषा
रामसेतु	रामानुजाचार्य	रामायण	राशि	रोजगार
रोमशा	लघुसिद्धान्तकौमुदी	लिपि	वर्गीकरण	
वल्लभ	वाल्मीकि	विद्यालय	विधि	विश्वनाथ
विश्वविद्यालय	वृष्टि	वेद	वैचारिक निबन्ध	वैशेषिक
व्याकरण	व्यास	व्रत	व्रत कथा	शंकराचार्य
शतक	शरद	शैव दर्शन	संख्या	संचार
संस्कृत	संस्कृत आयोग	संस्कृत गीतम्		
संस्कृत पत्रकारिता	संस्कृत प्रचार	संस्कृत लेखक		
संस्कृत वाचन	संस्कृत विद्यालय	संस्कृत शिक्षा		
संस्कृतसर्जना	सन्धि	समास	सम्मान	
सामुद्रिक शास्त्र	साहित्य	साहित्यदर्पण	सुबन्त	
सुभाषित	सूक्त	सूक्ति	सूचना	सोतर सिस्टम
सोशल मीडिया	स्तुति	स्तोत्र	स्त्रीप्रत्यय	स्मृति
स्वामि रङ्गरामानुजाचार्य	हास्य	हास्य काव्य		
हुलासगंज	DEVNAGARI SCRIPT	DHARMA		
EPIC	JAGDANAND JHA			
JRF IN SANSKRIT (CODE- 25)	KAHANI			
LIBRARY	MAGAZINE	MAHABHARATA		
MANUSCRIPTOLOGY	PUSTAK SANGDARSHIKA			
SANSKRIT	SANSKRIT LANGUAGE			
SANSKRIT SAPTAHA	SANSKRITSARJANA			
SEX	STUDENT CONTEST	UGC NET/ JRF		

PAGES

संस्कृत- शिक्षण- पाठशाला 1

संस्कृत शिक्षण पाठशाला 2

विद्वत्परिचय: 1

विद्वत्परिचय: 2

विद्वत्परिचय: 3

स्तोत्र - संग्रह:

पुस्तक विक्रय पटल

काव्यप्रकाश: (दशम उल्लास: 2)

जगदानन्द झा

करोना के परिप्रेक्ष्य में स्मृति ग्रंथों में वर्णित आचरण की व्यवस्था

जगदानन्द झा

काव्यप्रकाश: (दशम उल्लास: 1)

photo

काव्यप्रकाश: (नवम उल्लास:)

मध्यकालीन संस्कृत साहित्य

काव्यप्रकाश: (अष्टमोल्लास:)

आपको क्या चाहिए?

इस ब्लॉग में संस्कृत के विविध विषयों पर आलेख उपलब्ध हैं, जो मोबाइल तथा वेब दोनों वर्जन में सुना, देखा व पढ़ा जा सकता है। मोबाइल के माध्यम से ब्लॉग पढ़ने वाले व्यक्ति, **search, ब्लॉग की सामग्री यहाँ खोजें, लेखाभिज्ञानम्** तथा **लेखानुक्रमणी** के द्वारा इच्छित सामग्री खोज सकते हैं।कम्प्यूटर आदि पर मीनू बटन दृश्य हैं। यहाँ पाठ लेखन तथा विषय प्रतिपादन के लिए 20,000 से अधिक पृष्ठों, कुछेक ध्वनियों, रेखाचित्रों, चित्रों तथा चलचित्रों को संयोजित किया गया है। विषय सम्बद्धता व आपकी सहायता के लिए लेख के मध्य तथा अन्त में सम्बन्धित विषयों का लिंक दिया गया है। वहाँ क्लिक कर अपने ज्ञान को आप पुष्ट कर रहे हैं। इन्टरनेट पर अधिकचरे ज्ञान सामग्री की भरमार होती है। कई

बार जानकारी के अभाव में लोग गलत सामग्री पर भरोसा कर लेते हैं। ई-सामग्री के महासमुद्र में इच्छित व प्रामाणिक सामग्री को खोजना भी एक जटिल कार्य है। इन परिस्थितियों में मैं आपके साथ हूँ। आपको मैं प्रामाणिक सामग्री उपलब्ध कराने के साथ आपकी कठिनाईयों को दूर करने के लिए वचनबद्ध हूँ। प्रत्येक लेख के अंत में **मुझे सूचित करें** बटन दिया गया है। यहाँ पर क्लिक करना नहीं भूलें।

Copyright © 2020 Sanskritbhashi संस्कृतभाषा | Powered by Blogger

Design by FlexiThemes | Blogger Theme by NewBloggerThemes.com